राजस्थान के प्रमुख एवं संकटग्रस्त

वन्य जीव

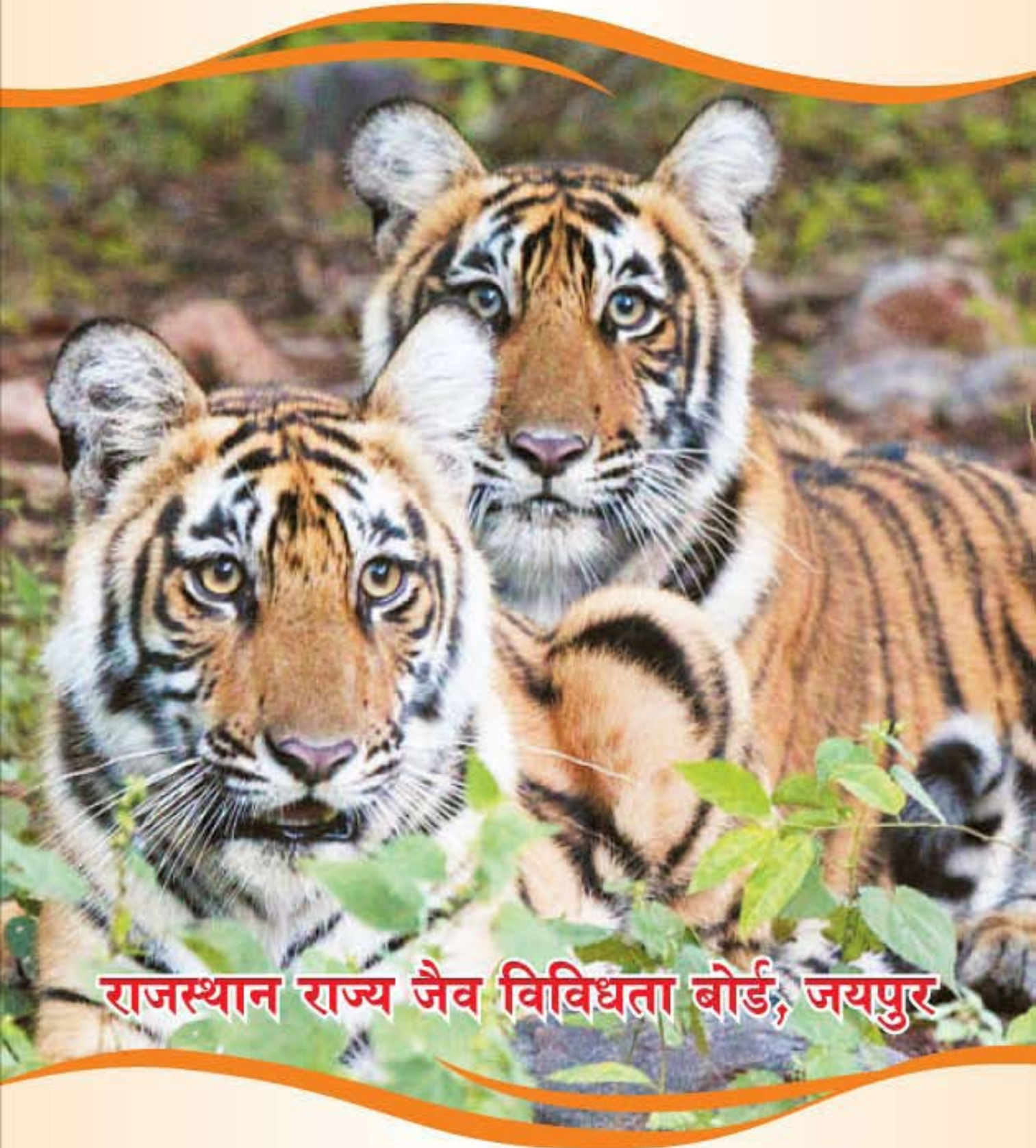

राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड, जयपुर

जैव विविधता के संबंध में कुछ रोचक तथ्य

1. पृथ्वी पर अनुमानत: 1.4 करोड़ जीव प्रजातियाँ है जिनमें से अभी तक केवल 17.5 लाख प्रजातियों की ही पहचान हो पाई है। इनमे से 3.42 लाख वनस्पति प्रजातियाँ तथा 14.08 लाख जन्तु प्रजातियाँ है।

2. विश्व की कुल जीव प्रजातियों की लगभग 70 प्रतिशत प्रजातियाँ, 12 देशों में पाई जाती हैं– ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, चीन, कोलम्बिया, कोस्टारिका, कांगो, इक्वेडोर, भारत, इंडोनेशिया, मेडागास्कर, मैक्सिको एवं पेरू।

3. भारत में अब तक लगभग 45,500 वनस्पति प्रजातियों तथा 91,000 जन्तु प्रजातियों की पहचान हो चुकी है।

4. विश्व में आज लगभग 4,000 जन्तु प्रजातियाँ तथा 60,000 वनस्पति प्रजातियाँ विलुप्ति के कगार पर है। आज पृथ्वी पर प्रत्येक 8 में से एक चिडिया, प्रत्येक 4 में से एक स्तनपायी, प्रत्येक 4 में से एक कोणधारी वृक्ष, प्रत्येक 3 में से एक उभयचर, प्रत्येक 7 में से 6 कछुए, प्रत्येक 4 में से 3 मछली प्रजातियाँ विलुप्त होने का खतरा झेल रही है।

5. भारत से वर्ष 1900 में जेरडॉन कॉर्सर पक्षी, 1935 में गुलाबी सिर वाली बतख तथा वर्ष 1946 में चीता पूर्ण रूप से विलुप्त हो चुके हैं।

6. विश्व के लगभग 60 प्रतिशत लोग औषधियों के लिए पौधों पर निर्भर करते है। 70,000 से अधिक पौधों की प्रजातियाँ औषधि के लिए उपयोग में ली जाती है।

7. वर्तमान में जैव प्रजातियों की विलुप्तता दर प्राकृतिक दर से 1000 गुणा अधिक हैं।

8. पृथ्वी पर मनुष्य की खाद्य आवश्यकताओं की लगभग 50 प्रतिशत पूर्ति केवल तीन प्रजातियों गेंहू, चावल व मक्का से होती है, जबकि पृथ्वी पर 30,000 वनस्पति प्रजातियाँ खाने योग्य है।

9. आई.यू.सी.एन के अनुसार पारिस्थितिकीय क्षेत्रो से हमें प्रतिवर्ष 33 लाख करोड़ डॉलर मूल्य के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त होते है।

बीना काक
मंत्री
वन, पर्यावरण एवं पर्यटन
राजस्थान सरकार

संदेश

पुराने समय में मनुष्य एवं वन्यजीव एक ही प्राकृतिक परिवेश में रहते हुए अपना जीवन व्यतीत करते थे जिससे मनुष्य, वन्य जीवों के तथा वन्य जीव, मनुष्यों के व्यवहार व आदतों से परिचित होते थे। किन्तु बढ़ती जनसंख्या, औद्योगीकरण एवं प्राकृतिक संसाधनों के अनियंत्रित विदोहन से वन्य जीवों के प्राकृतिक आवास नष्ट होते गए तथा वन्य जीवों की संख्या में लगातार कमी होती गई। यहां तक कि आज वन्य जीव कुछ संरक्षित क्षेत्रों अर्थात राष्ट्रीय उद्यान व अभयारण्य तक सीमित हो गए हैं। आज जब कोई वन्य जीव अनायास किसी मानव बस्ती में आ जाता है तो सब उसे कौतुहूल से देखते हैं तथा जानकारी के अभाव में उसे मार डालते हैं। मैं समझती हूँ यह पुस्तक, जिसमें राजस्थान के मुख्य व संकटग्रस्त वन्य जीवों के बारे में सचित्र, सारगर्भित जानकारी दी गई है बच्चों, युवाओं और आमजन में वन्य जीवों की जानकारी देने तथा उनके संरक्षण के लिए उपयोगी साबित होगी।

Beena K

(बीना काक)

सी.के. मैथ्यू

मुख्य सचिव, राजस्थान
एवं अध्यक्ष
राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड
जयपुर

संदेश

वन्य जीव हमारे पारिस्थितिकीय तंत्र का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। पर्यावरण के संतुलन के लिए इनका एक निश्चित संख्या में बने रहना आवश्यक है। किन्तु पिछले दशकों में वन्य जीवों की संख्या में तेजी से कमी आई है।

बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकता की पूर्ति हेतु आवास बनाने एवं कृषि पैदावार बढ़ाने के लिए वनों का अंधाधुंध कटान किया गया जिससे वन्य जीवों के प्राकृतिक आवास कंकरीट के जंगलों एवं खेतों में परिवर्तित हो गए। परिणामस्वरूप वन्य जीव कुछ ही क्षेत्रों तक सीमित रह गए, मनुष्यों व वन्य जीवों का पारस्परिक व्यवहार समाप्त हो गया। आज की पीढ़ी अधिसंख्य वन्य जीवों को पहचान नहीं पाती। अत: यह पुस्तक ऐसे लोगों व बच्चों के लिए विशेष उपयोगी साबित होगी तथा इससे वन्य जीव संरक्षण को बढ़ावा मिलेगा।

(सी.के. मैथ्यू)

कृष्ण कुमार गर्ग

सदस्य सचिव

राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड, जयपुर

फोन : 0141-2377957

प्राक्कथन

वन्यजीव, जैवविविधता के मुख्य घटक तथा खाद्य श्रृंखलाओं की महत्त्वपूर्ण कड़ी है। किसी भी वन्यजीव के विलुप्त होने से हमारे पर्यावरण का संतुलन बिगड़ सकता है। पिछले कुछ दशको में वनों के अनियोजित कटान ने वन्यजीवों के प्राकृतिक आवासों को नष्ट किया है, जिसके परिणाम स्वरुप वन्यजीवों की संख्या में बेहद कमी आई है। यद्यपि वन्य जीवों की सुरक्षा एवं संरक्षण हेतु प्रदेश में राज्य सरकार द्वारा कई सरंक्षित क्षेत्र (राष्ट्रीय उद्यान, अभयारण्य व कम्यूनिटी रिजर्व) घोषित किए गए है तथा वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972 लागू है, किन्तु जब तक आज की पीढ़ी को वन्यजीवों के प्रति संवेदनशील व जागरुक नहीं किया जाएगा, हम इस धरोहर को नहीं बचा पाएंगें।

आज की पीढ़ी को वन्य जीवों से परिचित कराने हेतु राजस्थान के मुख्य एवं संकटग्रस्त वन्यजीवों के बारे में सचित्र सारगर्भित जानकारी इस पुस्तक में संकलित की गई हैं। प्रदेश के छात्र-छात्राओं, बच्चों, युवाओं, ग्रामीणों, प्रशिक्षण संस्थानों आदि के लिए यह पुस्तक उपयोगी साबित होगी।

इस पुस्तक के प्रकाशन व सम्पादन में श्री महेश चन्द गुप्ता, उप वन संरक्षक एवं मुख्य प्रबंधक (तकनीकी) ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है जिसके लिए वह प्रशंसा के पात्र हैं। इसके अलावा श्री मनोज पाराशर, उप वन संरक्षक ने वन्यजीवों के छात्राचित्र उपलब्ध कराए हैं जिसके लिए वे साधुवाद के पात्र है।

शुभकामनाओं सहित।

जयपुर
1 मई, 2012

(कृष्ण कुमार गर्ग)

बाघ
TIGER
(Panthera tigris)

संकटग्रस्त
(Endangered)

कुल	:	**बिल्ली (Felidae)**
स्थानीय नाम	:	**बाघ, शेर, नाहर**
शारीरिक रचना	:	**लंबाई– 280 से 300 सेमी.** **ऊँचाई– 100 से 110 सेमी.** **वजन– 185 से 225 किग्रा** **आयु– 12 से 15 वर्ष (जंगल में)** **15 से 20 वर्ष (चिड़ियाघर में)** **प्रजनन काल– नवम्बर से अप्रैल** **गर्भकाल– 110 से 115 दिवस**
पहचान	:	**सुनहरे रंग के शरीर पर काली धारियां**
आवास	:	**शुष्क झाड़ी वाले वनों से लेकर सदाबहार एवं ठंडे वन क्षेत्रों तक विस्तृत।**
भोजन	:	**मांसाहारी। सांभर, चीतल, नीलगाय, जंगली सुअर मुख्य भोजन है।**
आदत	:	**यह प्राय: एकल प्राणी है जिसका परिसर स्पष्ट व विस्तृत होता है। एक नर बाघ के परिसर में प्राय: एक से पांच मादा बाघ के उप परिसर होते हैं। यह रात्रिचर परभक्षी प्राणी है। किन्तु कई स्थानों पर दिन में भी आसानी से दिखता है।**
विशेष	:	**बाघ हमारा राष्ट्रीय पशु है।**

बघेरा
LEOPARD OR PANTHER
(Panthera pardus)

संकटापन्न
(Threatened)

कुल (Family)	:	बिल्ली (Felidae)
स्थानीय नाम	:	बघेरा, दोगला, तेन्दुआ
शारीरिक रचना	:	लंबाई– 200 से 220 सेमी. ऊँचाई– 60 से 75 सेमी. वजन– 50 से 70 किग्रा आयु– 15 से 20 वर्ष प्रजनन काल–वर्ष पर्यन्त गर्भकाल–3 माह
पहचान	:	सुनहरी हल्के भूरे शरीर पर काले रंग के गोल धब्बे।
आवास	:	बघेरा सामान्यत : जंगलों के बाहर मानव बस्तियों के आस पास रहता है तथा पालतू जानवरों यथा गाय, भेड़, बकरी, कुत्ता, गधा आदि का शिकार करता है।
भोजन	:	माँसाहारी। बंदर, हिरण, सुअर, मोर, कुत्ता, बकरी, भेड़ आदि मुख्य भोजन है।
आदत	:	यह प्राय: रात्रिचर परभक्षी है तथा सामान्यत: रात में ही अपना शिकार करता है।

सियागोश
CARACAL
(Felis caracal)

संकटग्रस्त
(Endangered)

कुल (Family)	:	बिल्ली (Felidae)
स्थानीय नाम	:	सियागोश
शारीरिक रचना	:	लंबाई– 90 से 100 सेमी. (पूंछ सहित) ऊँचाई– 40 से 45 सेमी. वजन– 15 से 20 किग्रा आयु– 10 वर्ष प्रजनन काल– वर्ष पर्यन्त गर्भकाल– 75 से 80 दिवस
पहचान	:	चौड़ा माथा, उठे हुए काले रंग के कान, शरीर लालिमा युक्त सलेटी रंग का जबकि ढोडी, गले व पेट का हिस्सा सफेद रंग का होता है। नर व मादा दिखने में एक जैसे होते है।
आवास	:	शुष्क वन एवं झाड़ी युक्त क्षेत्र। यह अपने बच्चों की देखभाल हेतु किसी अन्य जानवर द्वारा छोड़े गए बिल, पेड़ के खोखले तनों व चट्टानों की दरारों का उपयोग करता है।
भोजन	:	मांसाहारी। यह पक्षियों, छोटे हिरणों, चूहे, खरगोश आदि का शिकार करता है।
आदत	:	यह उछलने व पेड़ पर चढ़ने में माहिर होते है। अपने शिकार को उछल कर पकड़ता है।

जंगली बिल्ली
JUNGLE CAT
(Felis chaus)

कुल (Family)	:	**बिल्ली (Felidae)**
स्थानीय नाम	:	**बाघ बिल्ली, जंगली बिल्ली।**
शारीरिक रचना	:	**लंबाई– 90 सेमी (पूंछ सहित)** **ऊँचाई– 25 से 30** **वजन– 5 से 6 किग्रा** **आयु– 10 से 15 वर्ष** **प्रजनन काल– जनवरी से अप्रैल व अगस्त से नवम्बर** **गर्भकाल– 60 से 65 दिवस**
पहचान	:	**बालुई रंग, लम्बे पैर, छोटी पूंछ जिसका सिरा काले रंग का, आँखे हरापन लिए हुए।**
आवास	:	**शुष्क झाड़ी वाले वन क्षेत्र। समस्त भारत।**
भोजन	:	**मांसाहारी। चूहा, छंछूदर, पक्षी आदि इसका मुख्य भोजन है।**
आदत	:	**जंगल के शुष्क एवं खुले क्षेत्र पसंद करती है। प्रातः एवं सायंकाल में भोजन के लिए निकलती है।**

भेड़िया
WOLF
(Canis lupus)

संकटापन्न
(Threatened)

कुल (Family)	:	कुत्ता (Canidae)
स्थानीय नाम	:	भेड़िया, खोल्या
शारीरिक रचना	:	लंबाई– 90 से 105 सेमी. ऊँचाई– 65 से 75 सेमी. पूंछ– 30 से 40 सेमी. वजन– 18 से 27 किग्रा आयु– 12 से 15 वर्ष प्रजनन काल– अक्टूबर से नवम्बर गर्भकाल– 60 से 63 दिवस
पहचान	:	बालुई शरीर पर काले धब्बे होते है जबड़ा काफी बड़ा होता है।
आवास	:	यह शुष्क व खुले क्षेत्रों में पाया जाता है तथा गुफाओं, दरारों व मिट्टी में खड्डे खोदकर रहता है।
भोजन	:	मांसाहारी। कृष्णमृग, चिंकारा, खरगोश, पक्षी, मवेशी आदि मुख्य भोजन है।
आदत	:	यह दिन व रात दोनो समय शिकार करते है। भूख की अवस्था में ये पालतू जानवरों व मनुष्यों पर भी हमला कर देते है। यह मनुष्य के बच्चों को उठा ले जाने के लिए बदनाम है।

सियार
JACKAL
(Canis aureus)

कुल (Family)	:	**कुत्ता (Canidae)**
स्थानीय नाम	:	**गीदड़, गेंदवा, शियाल**
शारीरिक रचना	:	**लंबाई– 80 से 100 सेमी.** **ऊँचाई– 38 से 45 सेमी.** **वजन– 8 से 11 किग्रा** **आयु– 8 से 12 वर्ष** **प्रजनन काल– वर्ष पर्यन्त** **गर्भकाल– 60 से 65 दिवस**
पहचान	:	**बालुई रंग जिस पर काली झांईयां होती है। भेड़ियों से साईज में छोटा होता है।**
आवास	:	**सम्पूर्ण भारत। सामान्यत: गांवों तथा खेतों से लगते क्षेत्रों में जमीन में खड्डे खोदकर रहते हैं।**
भोजन	:	**यह मृतजीवी है तथा मरे हुए पक्षियों एवं जानवरों पर निर्भर रहते हैं। हिरण, भेड़ व बकरी के बच्चों को भी अपना भोजन बना लेते हैं।**
आदत	:	**यह सूर्यास्त से सूर्योदय तक सक्रिय रहते हैं तथा भोजन की तलाश में जाते है। रात्रि में विशेष आवाज में चिल्लाते हैं।**

लोमडी
INDIAN FOX
(Vulpes bengalensis)

कुल (Family)	:	**कुत्ता (Canidae)**
स्थानीय नाम	:	**लोमडी, फिरावडी, लोकरी**
शारीरिक रचना	:	**लंबाई– 70 से 95 सेमी.** **ऊँचाई– 40 से 50 सेमी.** **वजन– 1.8 से 3.2 किग्रा** **आयु– 5 से 6 वर्ष** **प्रजनन काल– शीत ऋतु** **गर्भकाल– 50 से 53 दिवस**
पहचान	:	**यह हल्के भूरे सलेटी रंग का छोटा, चालाक एवं फुर्तीला जानवर है। पूंछ मोटी व गुच्छेदार होती है तथा पूंछ का सिरा काले रंग का होता है।**
आवास	:	**पडत, बालुई व झाड़ीयुक्त क्षेत्र में जमीन के अन्दर खोह बनाकर रहती है।**
भोजन	:	**चूहे, सांप, चिड़िया, कीड़े–मकोड़े, फल, फूल, कन्दमूल आदि। दीमक इसका प्रिय भोजन है।**
आदत	:	**घने वन क्षेत्रों में नहीं जाती है। अधिकांशत: पडत, खुली भूमि पर 2 से 3 फुट गहरा खडड्ा बनाकर रहती है। सामान्यत: सांयकाल में भोजन की तलाश में निकलती है।**

लकड़बग्घा
STRIPED HYAENA
(Hyaena hyaena)

संकटापन्न
(Threatened)

कुल (Family)	:	तरक्ष (Hyaenidae)
स्थानीय नाम	:	जरख, लकड़बग्घा, हुन्दर
शारीरिक रचना	:	लंबाई– 150 सेमी. (सिर से पूंछ तक) ऊँचाई– 90 सेमी. वजन– 38 से 40 किग्रा आयु– 20 वर्ष प्रजनन काल– शीत ऋतु गर्भकाल– 85 से 90 दिवस
पहचान	:	सलेटी/राख जैसा रंग, सिर से सीने तक का भाग चौड़ा व भारी तथा पीछे का हिस्सा पतला व हल्का। आगे के पैर लम्बे, आगे के हिस्से में लम्बे बाल। पूरे शरीर पर काली धारियां।
आवास	:	समस्त भारत। सामान्यतः छोटी पहाड़ियों, रेवाइन्स में गुफा बनाकर तथा झाड़ियों एवं खेतों में रहता है।
भोजन	:	यह मृत जीवी है। मरे हुए जानवरों तथा दूसरे के शिकार के बचे हुए मांस–हड्डी को अपना भोजन बनाता है। इसी कारण इसे जंगल का सफाई कर्मी भी कहा जाता है।
आदत	:	यह सूर्यास्त से सूर्योदय के मध्य अपने भोजन की तलाश में निकलता है। भोजन की तलाश में कई किलोमीटर चलता है।
विशेष	:	इसके शरीर पर काली धारियों के कारण ग्रामीण इसे बाघ समझ लेते हैं।

बिज्जू
RATEL
(Mellivora capensis)

संकटग्रस्त
(Endangered)

कुल (Family)	:	पिंगलक (Mustelidae)
स्थानीय नाम	:	बिज्जू, बजरा
शारीरिक रचना	:	लंबाई – 60 सेमी. (पूंछ 15 सेमी) ऊँचाई– 25 से 30 सेमी. वजन–8 से 10 किग्रा आयु– 20 वर्ष गर्भकाल– 6 मास
पहचान	:	शरीर की ऊपरी सतह सफेद या मटमैली जबकि मुंह, छाती, पेट व पूँछ का पीछे का भाग गहरा काला। टांगे छोटी व चौडी होती है। पीछे से ये भालू जैसे लगते है।
आवास	:	उबड़–खाबड़ पहाड़ी क्षेत्र तथा नदी या पानी के किनारे जहां ये खोह में या खड्डे खोदकर रहते है।
भोजन	:	यह मांसाहारी होता है तथा छोटे स्तनधारियों, पक्षियों, कीड़े–मकोड़ो तथा रेप्टाइल्स का शिकार करता है। फल व शहद भी शौक से खाता है।
आदत	:	यह भालू के समान चलता एवं उछल कूद करता है। यह नदियों के बालुई पाट में गहरे गड्डे खोद देता है जिस कारण इसे ''कब्र खोदने वाला जीव'' भी कहते है।

नेवला
COMMON MONGOOSE
(Herpestes edwardsi)

कुल (Family)	:	**विसर्पी (Herpestidae)**
स्थानीय नाम	:	**मंगूस, नेवला**
शारीरिक रचना	:	**लंबाई – 90 सेमी. (45 सेमी पूंछ सहित)** **वजन– 1.4 किलोग्राम तक** **आयु– 7 से 8 वर्ष** **प्रजनन काल– वर्ष पर्यन्त** **गर्भकाल– 2 माह**
पहचान	:	**पीले सलेटी रंग के शरीर पर शरीर के आकार की लंबी पूंछ। बालों पर सफेद व काले छल्ले।**
आवास	:	**खुले जंगल, झाड़ी युक्त क्षेत्र तथा खेती के आस–पास के क्षेत्र इनका मुख्य आवास है। ये चट्टानों, झाड़ियों, पेड़ की खोलो तथा जमीन में खोह बनाकर रहते है।**
भोजन	:	**चूहे, सांप, छिपकली, मेंढ़क, मकड़ी, पक्षियो के अंडे, कीड़े–मकोड़े इसका मुख्य भोजन है। फलों एवं जड़ो को भी खाते है।**
आदत	:	**यह अपने पीछे के पैरो पर खड़ा होकर शिकार करता है। तनाव एवं उत्तेजना में इसके बाल खड़े हो जाते है जिससे इसका आकार दुगुना हो जाता है।**

भालू
SLOTH BEAR
(Melursus ursinus)

संकटग्रस्त
(Endangered)

कुल (Family)	:	**ऋक्ष (Ursidae)**
स्थानीय नाम	:	**रीछ, भालू**
शारीरिक रचना	:	**लंबाई– 140 से 170 सेमी.** **ऊँचाई– 65 से 85 सेमी.** **वजन– 120 से 150 किग्रा** **आयु– 30 से 40 वर्ष** **प्रजनन काल– दिसम्बर से जनवरी** **गर्भकाल– 7 से 8 माह**
पहचान	:	**मुँह को छोड़कर शेष पूरे शरीर पर काले लम्बे बाल होते हैं। इसके पद चिन्ह मनुष्यो के समान होते है।**
आवास	:	**लगभग सम्पूर्ण भारत में घने जंगलों तथा पहाड़ों पर।**
भोजन	:	**सामान्यत: शाकाहारी। फल, फूल, शहद, दीमक व कंदमूल मुख्य भोजन है।**
आदत	:	**यह निशाचर है। सूर्यास्त के समय अपने भोजन की तलाश में निकलता है। फल व शहद के लिए यह पेड़ों पर चढ़ जाता है। यह दीमक खाने का शौकीन है।**

खरगोश
INDIAN HARE
(Lepus nigricollis)

कुल (Family)	:	**शश (Leporidae)**
स्थानीय नाम	:	**खरगोश, सूस्या**
शारीरिक रचना	:	**लंबाई– 40 से 50 सेमी.** **वजन– 1.8 से 2.3 किग्रा** **प्रजनन काल– अक्टूबर से फरवरी** **गर्भकाल– 2 माह**
पहचान	:	**गहरे बादामी रंग के शरीर पर काले बाल, पूंछ का ऊपरी भाग काला।**
आवास	:	**झाड़ीयुक्त वनो तथा खेतों के आस–पास जमीन में खोह/बिल बनाकर रहते है।**
भोजन	:	**शाकाहारी। घास, कंदमूल, फल–फूल, बीज आदि मुख्य भोजन।**
आदत	:	**यह मुख्यतः सूर्यास्त के बाद सक्रिय होता है। यह बहुत तेज दौड़ता है तथा शीघ्र झाड़ियों में छुपकर अपने दुश्मनो से बचता है।**

सेही
INDIAN PORCUPINE
(Hystrix indica)

कुल (Family)	:	हिस्ट्रीसाइडी (Hystricidae)
स्थानीय नाम	:	सेही, सहेली
शारीरिक रचना	:	लंबाई– 70 से 90 सेमी. वजन– 11 से 18 किग्रा आयु– 15 वर्ष प्रजनन काल– दिसम्बर से मार्च गर्भकाल– 2 माह
पहचान	:	सलेटी/काले रंग का जीव जिसके गर्दन व कमर के बाल लंबे कांटो के रुप में रूपान्तरित होते है। कांटो पर काले व सफेद छल्ले होते हैं तथा यह 15 से 20 सेमी तक लंबे होते हैं।
आवास	:	यह वन तथा खुले दोनों क्षेत्रों में पायी जाती है। प्राकृतिक खोह अथवा मिट्टी में खड्डा खोदकर रहती है।
भोजन	:	सब्जी, फल, अनाज तथा जड़ें इनका मुख्य भोजन है। यह कभी–कभी खेतो की फसलों को खोदकर नष्ट कर देती हैं।
आदत	:	यह अपने घर के सामने हिरणों के गिरे सींगों तथा हड्डियों का झुण्ड रखते है जिससे इनके कांटो को बढ़ने के लिए कैल्शियम व चूने की आपूर्ति होती रहती है। यह एक निश्चित रास्ते का पीछे करने में माहिर होती है तथा अपने दुश्मन पर पीछे की ओर चलकर कांटो से वार करती है।

चींटी खोरा
PANGOLIN
(Manis crassicaudata)

संकटापन्न
(Threatened)

कुल (Family)	:	मौनदी (Manidae)
स्थानीय नाम	:	चींटी खोरा, बजरा किट, सूरज मुखी, सीलू
शारीरिक रचना	:	लंबाई–60 से 75 सेमी. (पूंछ – 45 सेमी.) वजन–1.6 से 30 किग्रा आयु–13 से 15 वर्ष
पहचान	:	इसके पूरे शरीर व पूंछ के ऊपर बडे, चपटे व कठोर शल्कों (Scales) का कवच होता है जो हमारे बाल व नाखून की तरह बढ़ते रहते है। इनका रंग भूरा, पीलापन लिए हुए होता है। इसकी जीभ लम्बी (30 से 40 सेमी) व लिसलिसी होती हैं। इसकी देखने व सुनने की क्षमता कम होती है किन्तु सूंघने की शक्ति प्रबल होती है। इसकी टांगे मोटी व मजबूत होती है। इसके दांत नहीं होते।
आवास	:	यह जमीन में 2.5 से 3.5 मीटर नीचे बिल बनाकर रहते है। जानवर के अंदर जाते ही बिल का मुंह बंद हो जाता है, अतः इन्हें ढूंढना काफी मुश्किल होता है।
भोजन	:	चींटीयाँ व दीमक तथा इनके अण्डे इसका मुख्य भोजन है।
आदत	:	खतरा भांपकर यह अपने शरीर को समेटकर गैंद के समान गोल कर लेता है।
तथ्य	:	भोजन की तलाश में यह पेड़ों पर चढ़ जाता है। पानी में भी अच्छी तरह से तैर सकता हैं। मादा अपने बच्चे को अपनी पूंछ पर लेकर चलती है। पैंगोलिन के शल्क (स्केल) कैराटिन नामक प्रोटीन के बने होते है।
विशेष	:	हमारे नाखून व बाल भी इसी प्रोटीन के बने होते हैं। एक पैंगोलिन प्रतिवर्ष 7 करोड़ कीट खा सकता है।

सांबर
SAMBAR
(Cervus unicolor)

कुल (Family)	:	मृग (Cervidae)
स्थानीय नाम	:	सांबर
शारीरिक रचना	:	लंबाई–150 से 200 सेमी. ऊँचाई–135 से 100 सेमी. वजन–225 से 300 किग्रा सींग–100 से 110 सेमी. आयु–15 से 20 वर्ष प्रजनन काल–नवम्बर से दिसम्बर गर्भकाल–6 माह
पहचान	:	भूरे मटमैले रंग का हिरण प्रजाति का सबसे बड़ा सदस्य। नर के सींग होते हैं। मादा के सींग नहीं होते तथा इसका रंग नर से हल्का होता है।
आवास	:	गहरे घने वन एवं ऊँची पहाड़ी क्षेत्र। नरों का झुंड मादाओं से प्राय: अलग रहता है।
भोजन	:	घास, पत्ते, जंगली फल आदि
आदत	:	यह मुख्यत: रात्रि में सक्रिय होता है। इसमें सुनने एवं सूंघने की अद्‌भुद क्षमता होती है। यह घने जंगल में बिना कोई आवाज किए चलने में माहिर होता है। यह एक अच्छा तैराक भी होता है।

चीतल
SPOTTED DEER
(Axis axis)

कुल (Family)	:	मृग (Cergidae)
स्थानीय नाम	:	चीतल , चित्रा
शारीरिक रचना	:	लंबाई– 100 से 150 सेमी. ऊँचाई– 70 से 90 सेमी. वजन– 80 से 90 किग्रा सींग– 80 से 90 सेमी. आयु– 15 से 20 वर्ष प्रजनन काल– वर्ष पर्यन्त गर्भकाल– 6 माह (वर्ष में दो बार)
पहचान	:	सुनहरी भूरे शरीर पर सफेद धब्बे। नर के सींग होते हैं, जो प्रतिवर्ष अगस्त –सितम्बर में गिर जाते हैं।
आवास	:	यह जल के आस–पास घास के मैदानों में रहना पसन्द करता है। यह 10 से 30 तक के झुण्डों में रहता है।
भोजन	:	घास, पत्ते, जंगली फल आदि
आदत	:	यह जल स्त्रोतों से अधिक दूर नहीं जाता। यह दिन में भी अपना भोजन करता रहता है तथा छायादार स्थान पर सुस्ता लेता है। यह गांवों के पास जाना पंसद नहीं करता। जंगल में यह बंदर से दोस्ती करना पंसद करता है।

नीलगाय
BLUE BULL
(Boselaphus tragocamelus)

कुल (Family)	:	**गाय (Bovidae)**
स्थानीय नाम	:	**नील गाय, रोंझ, रोजड़ा**
शारीरिक रचना	:	**लंबाई– 200 से 215 सेमी.** **ऊँचाई– 130 से 150 सेमी.** **वजन– 200 से 300 किग्रा** **सींग– 20 से 30 सेमी.** **आयु– 20 वर्ष** **प्रजनन काल– वर्ष पर्यन्त** **गर्भकाल– 8 से 9 माह**
पहचान	:	**घोड़े जैसी आकृति, पीछे का हिस्सा थोडा नीचा, खुरों, गालों, ओंठ, कान के अन्दर सफेद घब्बे। नर का रंग सलेटी काला तथा मादा का भूरा। नर के सींग होते हैं तथा गले पर काले बालों का गुच्छा होता है।**
आवास	:	**यह शुष्क व खुले मैदान में झाड़ी व घास युक्त आवास पंसद करती है। पहाड़ी तथा खेती के आसपास के क्षेत्रों में भी पायी जाती है।**
भोजन	:	**घास, पत्ते, जंगली फल आदि।**
आदत	:	**यह दिन भर सक्रिय रहते है तथा आजादी से खेतों में घुस जाते हैं। यह लम्बे समय तक बिना पानी के रह सकती है। यह एक ही स्थान पर मींगणी करती है।**

चौसिंगा
FOUR HORNED ANTELOPE
(Tetraceros quadricornis)

संकटग्रस्त
(Endangered)

कुल (Family)	:	**गाय (Bovidae)**
स्थानीय नाम	:	**चौसिंगा, डोडा**
शारीरिक रचना	:	**लंबाई– 95 सेमी.** **ऊँचाई– 65 सेमी.** **सींग– पीछे के 8–10 सेमी., आगे के 3 सेमी.** **वजन– 20 किग्रा** **आयु– 15 वर्ष** **प्रजनन काल– ग्रीष्म ऋतु** **गर्भकाल– 8 माह**
पहचान	:	**ऊपर का शरीर हल्के लाल–भूरे रंग का जबकि नीचे का हिस्सा सफेद होता है। सिर पर दो जोड़ी सींग होते है जिनमें से आगे के सींग छोटे होते है।**
आवास	:	**उबड़–खाबड़ पहाड़ी क्षेत्र तथा खुले जंगल व घास के मैदान।**
भोजन	:	**शाकाहारी। घास, पत्ते, फल–फूल।**
आदत	:	**इसे लगातार पानी की आवश्यकता होती है अत: यह ऐसे स्थानों पर मिलता है जहां पानी का स्थायी स्त्रोत हो। यह झुण्ड में नही मिलता। यह धीमी सीटी जैसी आवाज निकालता है।**

चिंकारा
INDIAN GAZELLE
(Gazelle gazelle)

कुल (Family)	:	**गाय (Bovidae)**
स्थानीय नाम	:	**चिंकारा, हिरण**
शारीरिक रचना	:	**लंबाई– 400 से 110 सेमी.** **ऊँचाई– 55 से 70 सेमी.** **वजन– 15 से 25 किग्रा** **सींग– 25 से 30 सेमी.** **आयु– 20 वर्ष** **प्रजनन काल– वर्ष पर्यन्त** **गर्भकाल– 165 दिवस**
पहचान	:	**शरीर के ऊपर का भाग हल्का भूरा, अखरोटी रंग का होता है जबकि नीचे का भाग सफेद रंग का। चेहरे पर दोनों तरफ सफेद धारी होती है। नाक के ऊपर काला धब्बा होता है। नर व मादा दोनो के सींग होतें है। नर के सींग धारीदार व लम्बे (25 से 30 सेमी) होते हैं मादा के सींग छोटे व सपाट होते हैं।**
आवास	:	**शुष्क झाड़ी युक्त खुले वन क्षेत्र, उबड़–खाबड़ जमीन व छोटी पहाडियां।**
भोजन	:	**सूखी हरी घास, पत्ते, फल, खरपतवार, आक, फोग, कैर आदि।**
आदत	:	**यह बहुत शर्मिला वन्य जीव है अत: मानव बस्तियां व खेतों के आस पास नहीं जाता। यह सामान्यत: प्रात: जल्दी तथा देर शाम को सक्रिय होता है। इसकी जल की आवश्यकता बहुत कम होती है।**
विशेष	:	**चिंकारा राजस्थान का राज्य पशु है।**

कृष्ण मृग
BLACK BUCK
(Antilope cervicapra)

संकटापन्न
(Threatened)

कुल (Family)	:	गाय (Bovidae)
स्थानीय नाम	:	मृग, हिरण
शारीरिक रचना	:	लंबाई– 120 सेमी. ऊँचाई– 70 से 80 सेमी. वजन– 30 से 40 किग्रा सींग– 50 से 70 सेमी. आयु– 10 से 13 वर्ष प्रजनन काल–वर्ष पर्यन्त गर्भकाल–165 दिवस
पहचान	:	काला/गहरा बैंगनी रंग तथा लंबे धारीदार स्प्रिंगनुमा सींग इसकी मुख्य पहचान है। पेट व पैर का पीछे का हिस्सा सफेद होता है।
आवास	:	घास के मैदान, खुले वन क्षेत्र, खेती बाड़ी के आस पास के क्षेत्र।
भोजन	:	छोटी कोमल घास व कृषि फसलें इनका मुख्य भोजन है।
आदत	:	यह 20–30 के झुण्ड में मिलते हैं। यह खेतों के आस पास रहना पसन्द करते हैं। सामान्यत: ये दोपहर तक चरते हैं तथा सांयकाल में भी सूर्यास्त से पूर्व सक्रिय हो जाते हैं।

उड़न गिलहरी
FLYING SQUIRREL
(Petaurista petaurista)

संकटग्रस्त
(Endangered)

कुल (Family)	:	**टैरोमाइनी (Pteromyini)**
स्थानीय नाम	:	**उड़न गिलहरी**
शारीरिक रचना	:	**लम्बाई – 45 सेमी. (पूंछ– 60 सेमी.)** **वजन – 1.5–2 किग्राम** **आयु – 5 से 8 वर्ष** **गर्भकाल– 45 दिवस**
पहचान	:	**यह भूरे रंग की होती है। इसकी कलाईयों से पैर की एडियों के बीच चमडे की झिल्ली पैराशूट की तरह फैली रहती है जो इसे उड़ने (Glide)में सहायता करती है।**
आवास	:	**यह शुष्क वनों में मुख्यत: पेड़ों के खोखले तनों में रहती है।**
भोजन	:	**पत्तियां, फल, फूल, बीज, जडें तथा कभी–कभी पक्षियों के अण्डें व छोटे कीट–पतंगे।**
आदत	:	**यह निशाचर जीव है तथा सूरज छिपने के बाद सक्रिय होता है।**
विशेष	:	**यह पक्षियों की तरह लगातार नहीं उड़ सकती वरन् एक पेड से दूसरे पेड पर हवा में तैरते हुए (Glide) उतरती है। यह 90 मीटर तक ''ग्लाइड'' कर सकती है।**

अनुसूची–III(19)

फोटो साभार – महेश चन्द्र गुप्ता

जंगली सुअर
WILD BOAR
(Sus scrofa)

कुल (Family) : सुअर (Suidae)

स्थानीय नाम : सूर, सुअर, वाराह

शारीरिक रचना :
लंबाई – 125 से 135 सेमी.
ऊँचाई– 80 से 90 सेमी.
वजन– 100 से 125 किग्रा
आयु– 8 से 10 वर्ष
प्रजनन काल– वर्ष भर
गर्भकाल– 4 मास

पहचान : पालतू सुअर से थोडे बड़े होते है। मुंह लम्बा तथा थूंथनी चपटी होती है। नर सुअर में नीचे के दांत 5–6 इंच बाहर की और निकले रहते है। रंग भूरा काला होता है जिस पर भूरे, सलेटी व सफेद रंग के बाल होते है।

आवास : यह घास व झाड़ीयुक्त वन क्षेत्र में रहता है।

भोजन : यह शाकाहारी व मांसाहारी दोनों है। शाक– सब्जी, पत्ते, कन्दमूल व जड़े इसके मुख्य भोजन है। कीड़े, सांप आदि भी खाता है।

आदत : ये सुबह जल्दी तथा सूर्यास्त के बाद सक्रिय होते है। बड़े–बड़े झुण्ड में रहना पसन्द करते है। ये खेतों में फसलों को भारी नुकसान पहुँचाते है।

लंगूर
COMMON LANGUR
(Presbytis entellus)

कुल (Family)	:	**Cercopithecidae**
स्थानीय नाम	:	बंदर, लंगूर, हनुमान बंदर
शारीरिक रचना	:	लंबाई – 100 से 110 सेमी. ऊँचाई– 60 से 75 सेमी. वजन– 16 से 21 किग्रा आयु– 25 वर्ष प्रजनन काल– फरवरी से मई गर्भकाल– 6 माह
पहचान	:	इसका मुंह, हाथ व पैर क पंजे काले होते है तथा लंबी पूंछ (90 से 100 सेमी तक) होती है।
आवास	:	समस्त भारत में वनो, मंदिरो के आस–पास तथा गांवो के नजदीक।
भोजन	:	ये शुद्ध शाकाहारी होते है तथा जंगली फल– फूल, बड्स, पत्ते आदि इनका मुख्य भोजन है।
आदत	:	ये 18 से 25 के झुण्ड में रहते है। वरिष्ठ नर झुण्ड का सरदार होता है। एक झुण्ड का परिसर 1.3 से 13 वर्ग किलोमीटर तक होता है। पेन्थर इसका मुख्य दुश्मन होता है।
विशेष	:	खतरों को देखकर यह विशेष आवाज निकाल कर अपने झुण्ड को सावधान कर देते है।

डॉल्फिन
GANGETIC DOLPHIN
(Platanista gangetica)

संकटग्रस्त
(Endangered)

कुल (Family)	:	**(Platanistidae)**
स्थानीय नाम	:	सुस, सुसु, सिसुमार
शारीरिक रचना	:	लम्बाई– 7 से 8 फुट गर्भकाल– 8 से 9 माह
पहचान	:	गहरा सलेटी रंग, चिकनी चमकीली त्वचा, नाक लम्बी पतली चौंच में रुपान्तरित, शरीर के मध्य में त्रिभुजाकार पंख जो तैरने में सहायक। मादा, नर की तुलना में लंबी हाती है ।
आवास	:	ताजा पानी की बहती हुई नदियाँ मुख्यत : गंगा व इसकी सहायक नदियाँ। राजस्थान में चम्बल नदी।
भोजन	:	छोटी मछली, जलीय जीव आदि।
आदत	:	पानी में तैरते समय यह सांस लेने के लिए कुछ सैकण्ड के लिए अपना सिर पानी की सतह के ऊपर लाती है।
तथ्य	:	• मनुष्य के बाद डॉल्फिन को सबसे समझदार जीव माना जाता है। • नदियों के किनारे खेती, नदियों पर बडे–बडे बाँधो के निर्माण, औधोगिक अपशिष्ट को नदियों में डालने के कारण इनकी संख्या तेजी से कम हो रही है। • डॉल्फिन के तेल में दर्द निवारक शक्ति होने तथा इसके मांस में कामोत्तेजना होने की भ्रांति ने भी इसके शिकार को बढ़ावा दिया है।
विशेष	:	डॉल्फिन विश्व स्तर पर संकटग्रस्त जीव है। भारत सरकार द्वारा वर्ष 2009 में इसे ''राष्ट्रीय जलीय जीव'' घोषित किया है।

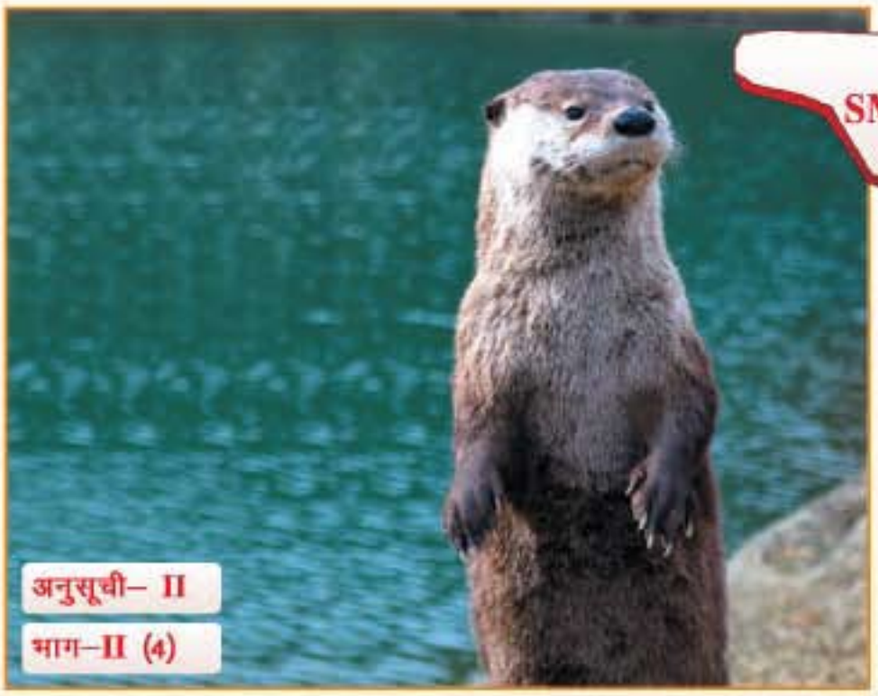

ऊद बिलाव
SMOOTH INDIAN OTTER
(Lutra perspicillata)

कुल (Family)	:	**मस्टेलिडी (Mustelidae)**
स्थानीय नाम	:	**ऊद बिलाव, जलमानुष, ऊदनी, पानीकुत्ता**
शारीरिक रचना	:	**लम्बाई– 105 से 120 सेमी. (सिर से पूंछ तक)** **वजन– 7 से 12 किलोग्राम** **गर्भकाल– 61 दिन**
पहचान	:	**यह चॉकलेटी भूरे रंग का जलीय जीव है। इसका माथा चौडा व सपाट, पूंछ मोटी व मजबूत, पंजे पैडल के आकार के होते है। कान छोटे होते है। पीछे के पैर आगे के पैरो की तुलना में बडे होते है। इसके मुंह पर नाक के पास लम्बे मजबूत उठे हुए बाल होते है। इसकी त्वचा चिकनी, चमकीली व जलरोधी होती है जो इसकी खास पहचान है।**
आवास	:	**नदी, झील व नहरों के किनारे बिल बनाकर रहते है।**
भोजन	:	**मछली, चूहे, जलीय पक्षी आदि।**
आदत	:	**यह बहुत अच्छा तैराक व गोताखोर है तथा मछलियों के शिकार के लिए गहरे पानी में चला जाता है। उत्तेजित होने पर यह पतली आवाज में कुत्ते की तरह भौंकता है। नदी–नालों में पानी समाप्त होने पर अपने को परिवर्तित परिस्थितियों के अनुरूप ढ़ाल लेता है तथा भूमि पर छोटे जानवरों का शिकार करता है।**

गोहरा
DESERT MONITOR LIZARD
(Varanus griseus)

संकटग्रस्त
(Endangered)

कुल (Family)	:	**वैरैनिडी (Varanidae)**
स्थानीय नाम	:	**गोह, गोहरा, पाटागोह**
शारीरिक रचना	:	**लम्बाई – 75 से 175 सेमी.** **गर्भकाल –8 से 9 माह**
पहचान	:	**गहरा बालुई रंग, लम्बा चपटा शरीर, गोल लम्बी पूंछ, लम्बी गर्दन, पतली–लम्बी व सांप की तरह दो भागों में विभक्त जीभ।**
आवास	:	**जमीन में बिल बनाकर तथा चट्टानों की दरारों में रहता है।**
भोजन	:	**मांसाहारी। सांप, कछुआ, मछली, मेंढक, पक्षी, पक्षियों व मगरमच्छ के अण्डे, चूहा, खरगोश, कीट–पतंगे आदि।**
आदत	:	**यह अपने आगे के दो पैरों पर खडा होकर लम्बी जीभ निकालकर फुंफकारता है। प्रातः व सांयकाल अधिक सक्रिय रहता है। खतरा महसूस करने पर यह सांस रोक कर मुर्दे के समान पड़ा रहता है। पीछा करने पर यह अपनी पूंछ 45 डिग्री कोण पर उठाकर भागता है।**
तथ्य	:	• **पेडों व दीवारों पर इसके पंजों की पकड मजबूत होती है परन्तु इतनी मजबूत नहीं होती, जैसी कि धारणा है, की कोई व्यक्ति इस पर रस्सी बांधकर चढ़ सके।** • **इसके काटने से बेहोशी व कमजोरी महसूस हो सकती हैं। यह गलत धारणा है कि इसकी सांसे जहरीली होती हैं जिसके प्रभाव से आदमी मर जाता है।** • **यह भी गलत धारणा है कि इसका मांस खाने से मांसपेशियों का दर्द दूर होता है।**

गोडावण
GREAT INDIAN BUSTARD
(Ardeotis nigriceps)

गंभीर संकटग्रस्त
(Critically Endangered)

कुल (Family)	:	**Otididae**
स्थानीय नाम	:	गोडावण, हुकना, तुकदर, सारंग
शारीरिक रचना	:	ऊँचाई– लगभग 1 मीटर लम्बाई– 92–122 सेमी. वजन – 8 से 14.5 किग्रा (नर) 3.5 से 6.75 किग्रा (मादा) आयु – 5 से 8 वर्ष
पहचान	:	शरीर का उपरी हिस्सा गहरा भूरा जिस पर काले पैच में सफेद धब्बे होते है। नर – सिर पर काला मुकुट, छाती पर काला बैण्ड तथा गर्दन सफेद रंग की होती है। मादा– छाती पर काला बैण्ड नही होता, गर्दन सलेटी रंग की होती है।
आवास	:	शुष्क घास के झाडी युक्त मैदान तथा शुष्क पतझड वन। भारत में राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश व कर्नाटक में पाया जाता है। राजस्थान में अजमेर, बाड़मेर, जैसलमेर आदि मरूस्थल जिलों में।
भोजन	:	घास–बीज, बेर, कीट, चूहे व छोटे सरिसृप आदि।
विशेष	:	यह राजस्थान का राज्य पक्षी है। वर्तमान में यह गंभीर रूप से संकटग्रस्त है तथा भारत में इनकी कुल संख्या लगभग 250 मात्र है।

गिद्ध
INDIAN VULTURE
(Gyps indicus)

गंभीर संकटग्रस्त
(Critically Endangered)

कुल (Family)	:	**Accipitridae**
स्थानीय नाम	:	**गिद्ध**
शारीरिक रचना	:	**लंबाई– 80–103 सेमी.** **चौडाई– 1.96–2.30 मी. (पंख फैलाव सहित)** **वजन– 5.5–6.3 किलोग्राम** **आयु– 15–20 वर्ष**
पहचान	:	**काला–भूरा या सलेटी रंग, पतला गंजा सिर, लम्बी सफेद गर्दन, पूंछ के पास का हिस्सा सफेद, पंखो के नीचे सफेद पट्टी, काली चौंच।**
आवास	:	**गांवो के आस–पास। बरगद, इमली जैसे बडे वृक्षों की चोटी पर टहनियों से चबूतरे की तरह का घोंसला बनाता है।**
भोजन	:	**मरे हुए, गले–सडे जानवरों को खाता है।**
तथ्य	:	• **विश्व में गिद्ध की 20 प्रजातियाँ पाई जाती है।** • **गिद्ध के पाचन तंत्र में ऐसे अम्ल होते है जो एन्थ्रेक्स, हैजा जैसी बीमारियों के जीवाणुओं को नष्ट कर देते है।** • **गिद्ध कभी स्वस्थ्य जानवर पर हमला नहीं करते केवल घायल व मरे जानवरो को निशाना बनाते है।** • **गिद्ध बीमार, मरे, गले–सडे जानवरों को खाकर मनुष्यों तथा जानवरों में रेबीज, एन्थ्रेक्स जैसी जानलेवा बीमारियां फैलने से रोकते है।**
विशेष	:	**खेतो मे कीटनाशको विशेषत: डिक्लोफेनेक (Diclofenec) के बढ़ते प्रयोग के कारण जानवरों में इसकी सान्द्रता बढ़ती जाती है जो मरने पर यदि गिद्ध द्वारा खाया जाता है तो उसके लिए घातक होता हैं।** **भारत में कभी 4 करोड़ गिद्ध थे जो अब 60,000 तक सिमट गए है।** **हमारे स्वस्थ जीवन के लिए इन्हें बचाया जाना आवश्यक है।**

राजस्थान के संरक्षित क्षेत्र

क्र.सं.	संरक्षित क्षेत्र का नाम	जिला / जिले	क्षेत्रफल (वर्ग किमी)	मुख्य वन्यजीव
(अ)	राष्ट्रीय उद्यान			
1.	रणथम्भौर	सवाई माधोपुर	282.03	बाघ, बघेरा, भालू, सांभर, चीतल
2.	केवलादेव (घाना)	भरतपुर	28.73	प्रवासी–अप्रवासी पक्षी, चीतल,पाइथन, नीलगाय, सांभर
3.	मुकन्दरा हिल्स (दर्रा)	कोटा,चित्तौड़गढ़	199.55	बघेरा, चीतल, चिंकारा, नीलगाय,भालू, जरख, जंगली सुअर
(ब)	अभयारण्य			
1.	बन्धबारेठा	भरतपुर	199.24	इग्रेट, कार्मोरेट, स्पून बिल, पिनटेल, स्टार्क, शोवलर, पोचार्ड
2.	सरिस्का	अलवर	492.29	बाघ, बघेरा, सांभर, चौसिंगा,चीतल, सेही
3.	राष्ट्रीय मरू उद्यान	जैसलमेर, बाडमेर	3162	चिंकारा, मरू बिल्ली, लोमड़ी, नीलगाय, गोडावण
4.	रामगढ़ विषधारी	बूंदी	307	बघेरा, जरख, रीछ, सियार, लोमड़ी, चीतल
5.	केसर बाग	धौलपुर	14.76	भेड़िया, जरख, लोमड़ी, चीतल
6.	रामसागर	धौलपुर	34.40	भेड़िया, जरख, लोमड़ी, चीतल
7.	वन विहार	धौलपुर	25.60	भालू, भेडिया, चीतल जरख, लोमडी, जगली बिल्ली
8.	कैलादेवी	करौली, सवाई माधोपुर	676.82	बघेरा, चीतल, चिंकारा, सांभर, भालू, जरख, जंगली सुअर, भेड़िया
9.	सीतामाता	चितौड़गढ़, उदयपुर	422.94	उड़न गिलहरी, बघेरा, जंगली–बिल्ली, सांभर, जरख, बिज्जू
10.	भैंसरोड़गढ़	चितौड़गढ़	201.4	बघेरा, रीछ, चौसिंगा चिंकारा, जरख, लोमड़ी

11.	शेरगढ़	बारां	81.67	बघेरा, चीतल, चिंकारा जंगली सुअर
12.	दर्रा	कोटा, झालावाड़	239.76	बघेरा, भेड़िया, सियार, चीतल, लोमड़ी, सांभर, रीछ, सेही
13.	जवाहर सागर	कोटा, बूंदी, चितौड़गढ़	220.09	बघेरा, भालू, भेडिया, घड़ियाल, मगरमच्छ, जलमानुष, चीतल, जरख, लोमड़ी, सियार
14.	राष्ट्रीय चम्बल घड़ियाल	कोटा, सवाई माधोपुर, बूंदी, करौली, धौलपुर	280.0	घड़ियाल, मगरमच्छ, उदबिलाव, कछुआ, डॉल्फिन, भालू, चिंकारा
15.	बस्सी	चितौड़गढ़	138.69	चीतल, चिंकारा, बघेरा, जरख, जंगली बिल्ली
16.	ताल छापर	चूरू	7.19	काला हिरण, नीलगाय, प्रवासी पक्षी
17.	नाहरगढ़	जयपुर	52.4	जरख, सियार, लोमड़ी, नीलगाय, खरगोश
18.	जमवारामगढ़	जयपुर	300	बघेरा, चीतल, जंगली सुअर, नीलगाय, जरख, सियार
19.	सज्जनगढ़	उदयपुर	5.19	बघेरा, जरख, जंगली बिल्ली, सियार, लोमड़ी
20.	फुलवारी की नाल	उदयपुर	511.4	बघेरा, जरख, जंगली बिल्ली, सियार, लोमड़ी
21.	टाटगढ़ रावली	राजसमंद, पाली, अजमेर	475.23	बघेरा, जरख, भेड़िया, नीलगाय, ग्रीन पीजन, जंगली मुर्गे
22.	जयसमन्द	उदयपुर	52.34	इग्रेट, स्नेक बर्ड, स्टॉर्क, जरख, सियार, चिंकारा, नीलगाय
23.	कुम्भलगढ़	उदयपुर, पाली, राजसमंद	610.528	बघेरा, रीछ, जरख, जंगली सुअर, नीलगाय, चौसिंगा, सांभर
24.	माऊन्ट आबू	सिरोही	326.1	बघेरा, भालू, जरख, भेड़िया, नीलगाय, सेही
25.	सवाईमानसिंह	सवाई माधोपुर	113.07	बाघ, बघेरा, जरख, लोमड़ी, भालू, चीतल, सांबर
(स)	कन्जरवेशन रिजर्व			
1.	बीसलपुर रिजर्व	टोंक	48.31	काला हिरण, भेडिया, जरख, सियार
2.	जोड बीड गाढवाला	बीकानेर	56.46	काला हिरण, जंगली–बिल्ली, जंगली सुअर
3.	सुन्धा माता	जालोर, सिरोही	117.49	बघेरा, भालू, भेड़िया, जरख, चिकारा
4.	गुढा विश्नोईयान	जोधपुर	2.31	चिकारा, काला हिरण, नीलगाय जंगली सुअर

आवरण पृष्ठ छायाचित्र साभार : बीना काक

परिकल्पना, आलेख, सकंलन एवं सम्पादन

महेश चन्द गुप्ता, उप वन संरक्षक एवं मुख्य प्रबंधक (तक.)

Design & Printed at Popular Printers, JPR Tel. : 0141-2606883